विपरीत लिंगों के बीच मेलजोल के इस्लामी दिशानिर्देश (2 का भाग 1)

रेटिंग:

विवरण: ?? ??? ????? ?? ??????? ?????? ?? ???????? ?? ??????? ?? ?????? ??????? ?? ??????? ???

श्रेणी: पाठ › सामाजिक बातचीत

द्वारा: Imam Mufti (© 2013 NewMuslims.com)

प्रकाशित हुआ: 08 Nov 2022

अंतिम बार संशोधित: 07 Nov 2022

उद्देश्य:

- इख्तिलात का मतलब जानना।
- विपरीत लिंगों के बीच स्वतंत्र मेल-जोल के मुद्दे के बारे में जागरूकता विकसित करना।
- यह जानना कि दिया के पैगंबर ने मस्जिद में पुरुषों और महिलाओं के बीच मेल-जोल को कैसे नियंत्रित किया।

अरबी शब्द:

- *????* - आस्था, विश्वास या दृढ़ विश्वास।
- *????????* - एक स्थान पर पुरुषों और महिलाओं की शारीरिक उपस्थिति।
- *???* - प्राकृतिक या अंतर्निहित शर्म और विनय की भावना।
- *????* - रुचि।
- *????* - वह व्यक्ति जो खून, विवाह या स्तनपान से किसी दूसरे व्यक्ति से संबंधित हो, चाहे पुरुष हो या महिला। किसी महिला/पुरुष को उसके पिता/माता, भतीजे/भतीजी, चाचा/चाची, आदि से शादी करने की अनुमति नहीं है।
- मस्जिद - प्रार्थना स्थल का अरबी शब्द।

·????? - "सहाबी" का बहुवचन, जिसका अर्थ है पैगंबर के साथी। एक सहाबी, जैसा कि आज आमतौर पर इस शब्द का प्रयोग किया जाता है, वह है जिसने पैगंबर मुहम्मद को देखा, उन पर विश्वास किया और एक मुसलमान के रूप में मर गया।

·?????? - अध्ययन के क्षेत्र के आधार पर सुन्नत शब्द के कई अर्थ हैं, हालांकि आम तौर पर इसका अर्थ है जो कुछ भी पैगंबर ने कहा, किया या करने को कहा।

आइए पहले तीन प्रारंभिक बिंदुओं पर चर्चा करें:

1. आधुनिक समाज में नैतिकता के बारे में मार्गदर्शक सिद्धांतों का अभाव है।

"सद्गुण" एक नैतिक मानक है जो एक समाज की आकांक्षा के योग्य है। लेकिन आधुनिक दुनिया में सद्गुण समय के साथ बदलते हैं। पुराने गुणों पर सवाल उठाया जाता है, नए गुणों का परिचय दिया जाता है। जिन नैतिक मानकों की कभी प्रशंसा होती थी और मूल्यवान माना जाता था आज उन पर सवाल उठाए जाते हैं और उनका उपहास किया जाता है। विवाह पूर्व संबंध और समलैंगिकता इसके दो उदाहरण हैं। सद्गुण व्यक्ति की आस्था से बनते हैं। जैसे-जैसे आस्था बदलती है, वैसे-वैसे समाज के सद्गुण भी बदलते हैं।

2. इस्लाम की शिक्षा तूफान में एक ठिकाना की तरह है।

इस्लाम नैतिक पतन और अनुमेय रवैये के तूफान में एक ठिकाना है। केवल वास्तविक रहस्योद्घाटन - इस्लाम के संदर्भ में - हवाला देकर ही लोग यह निर्धारित कर सकते हैं कि क्या सही है और क्या गलत। इस्लाम अपरिवर्तनीय नैतिकता, और गरिमा, हया और सम्मान जैसे गुणों का धर्म है। क़ुरआन और सुन्नत का हवाला देकर हम अपने आस-पास की अराजकता और लोगो के दिमागों में मौजूद भ्रम से बचा सकते हैं।

3. इस्लाम में कुछ चीजें दूसरों की तुलना में अधिक मुश्किल होती हैं।

इस्लाम में हम देखते हैं कि कुछ चीजें आसान होती हैं और कुछ चीजें मुश्किल हैं। हम आम तौर पर कह सकते हैं कि जिन चीजों को मुश्किल किया गया है उनमें से एक विपरीत लिंगों के बीच आचरण के नियम हैं। नशा और रिबा दो अन्य उदाहरण हैं।

जबकि मुसलमान और कुछ गैर-मुस्लिम शील को एक गुण के रूप में स्वीकार करते हैं, क्या "शीलता" की सांस्कृतिक व्याख्या की जाती है? दूसरे शब्दों में, क्या शील का मानक सांस्कृतिक आधार पर भिन्न है? शीलता के कुछ पहलुओं को क़ुरआन और सुन्नत में स्पष्ट रूप से वर्णित किया गया है जिनका पालन किया जाना चाहिए, जबकि अन्य को मुस्लिम संस्कृति ने अपने तरीके से विकसित किया है और पालन किया है। कुछ स्पष्ट नियम हैं, जबकि अन्य दिशानिर्देश हैं। फिर भी, कुछ मामले उन देशों की उपज हैं जहां इस्लाम फला-फूला था।

अरबी शब्द इख्तलात का अर्थ है 'मेलजोल', इस्लामी रूप से इसका अर्थ है असंबंधित पुरुष और महिला का मिलना, गैर- महरम पुरुष और महिलाओं का एक ही स्थान पर होना। इसकी वजह से वो मिलते हैं, बातचीत करते हैं और एक दूसरे को देखते हैं।

इस बारे में इस्लाम क्या कहता है?

समझने वाली पहली बात यह है कि इख्तलात के हर रूप की मनाही नहीं है। कुछ की अनुमति है और कुछ निषिद्ध हैं।

जब मुस्लिम विद्वान पुरुषों और महिलाओं के "स्वतंत्र" मेलजोल के खिलाफ चेतावनी देते हैं, तो वे केवल एक ही स्थान पर पुरुषों और महिलाओं की एक साथ उपस्थिति की बात नहीं करते हैं। यह अपने आप में निषिद्ध नहीं है। इस्लाम के पैगंबर के समय पुरुष और महिलाएं एक ही स्थान पर एकत्र होते थे, उदाहरण के लिए, मस्जिद और बाज़ार में। पुरुष और महिलाएं एक ही सड़कों और गलियों में चलते थे।

उदाहरण के लिए, एक मुस्लिम महिला को मस्जिद जाने की अनुमति है, भले ही वहां मुख्य रूप से पुरुष ज्यादा हों। यह इख्तलात का एक रूप है, लेकिन दया के पैगंबर ने इसे व्यवस्थित करने के लिए दिशानिर्देश दिए हैं।

पहला, पुरुषों को अपनी पंक्तियों में और महिलाओं को अपनी पंक्तियों में नमाज़ पढ़नी चाहिए। उनको एक दूसरे के बगल में खड़े होने की अनुमति नही है।

दूसरा, पुरुषों की पंक्तियां आगे होनी चाहिए और महिलाओं की पंक्तियां पीछे ताकि पुरुषों की नज़र नमाज़ के दौरान महिलाओं पर न पड़े।

तीसरा, पैगंबर मुहम्मद ने घोषणा की कि पुरुषों के लिए सबसे अच्छी पंक्ति सबसे आगे वाली है, सबसे खराब पंक्ति सबसे पीछे वाली है और महिलाओं के लिए सबसे अच्छी पंक्ति सबसे पीछे वाली है, और सबसे खराब पंक्ति सबसे आगे वाली है (मुस्लिम)। उन्होंने ऐसा पुरुषों और महिलाओं को अलग रखने के लिए कहा, जब वे शारीरिक रूप से एक जगह एकत्रित होते हैं।

चौथा, दया के पैगंबर ने पुरुषों को तब तक मस्जिद मे रुकने को कहा जब तक कि महिलाएं मस्जिद से बाहर न चली जाएं ताकि दरवाजे के पास भीड़ न जमा हो। बाद में जब मुस्लिम आबादी बढ़ गई, तो पैगंबर मुहम्मद ने महिलाओं के लिए एक अलग प्रवेश द्वार निर्धारित किया। यदि आप आज के समय मे मदीना में पैगंबर की मस्जिद जाते हैं, तो इसे बाब उन-निसा' (महिला द्वार) के नाम से जाना जाता है।

ध्यान रखें कि इन सावधानियों को सबसे अच्छे ईमान, सबसे शुद्ध दिल और सबसे अच्छे इरादों वाले लोगों यानि की सहाबा पर लागु किया गया था। इसके अलावा, ये उपाय महान पैगंबर की उपस्थिति में किये गए थे। इतना ही नहीं, बल्कि सहाबा भी उनके आसपास थे, और पैगंबर के लिए उनका सम्मान जगजाहिर है। इसके अलावा, इन उपायों को पैगंबर की मस्जिद में शुरू किया गया था जिसे अल्लाह ने सम्मानित किया है और विशेष योग्यता दी है। इससे भी ज्यादा, ये सावधानियां नमाज़ के दौरान बरती गई थी जब व्यक्ति अल्लाह के सामने खड़ा होता है और विचलित होने की संभावना बहुत कम होती है! इन सबके बावजूद, हमारे प्यारे पैगंबर ने ये निर्देश पाप की ओर आकर्षित होने से रोकने के लिए दिए थे।

जब भी हम इस मुद्दे के बारे में बात करते हैं, तो हमें अपने प्यारे पैगंबर द्वारा बरती जाने वाली सावधानियों को ध्यान में रखना चाहिए और हम जो कहते हैं और करते हैं उसे उसके आलोक में तौलना चाहिए और सोचना चाहिए कि हम उनके मार्गदर्शन से कितने करीब या दूर हैं।

इस लेख का वेब पता

https://www.newmuslims.com/hi/articles/197

कॉपीराइट © 2011 - 2024 NewMuslims.com. सर्वाधिकार सुरक्षित।